विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर, बुद्धि, का तुलनात्मक अध्ययन''

Sangeeta Negi Assistant Professor Malini Valley College of Education Kotdwar

वैश्वीकरण उपनिवेशवाद एवं आधुनिकता से जुड़ने का स्वभाविक परिणाम है। इसमें वह सभी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं जो उपनिवेशवाद और आधुनिकता में अन्तर्निहित हैं। वैश्वीकरण की प्रमुख प्रवृत्तियाँ आर्थिक उपनिवेशवाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवद, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, पूँजीवाद, व्यक्तिवाद, सूचना साम्राज्यवाद और भाषाई वर्चस्व है। इसके अतिरिक्त निजीकरण, उदारीकरण, राष्ट्रवाद का बहिष्करण, आउटसोर्सिंग, जन–संस्कृति का प्रसार आदि प्रवृत्तियाँ भी वैश्वीकरण में विद्यमान हैं।

वैश्वीकरण के राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं संस्कृति आदि विविध आयाम हैं, जिसके माध्यम से विश्व अत्याधिक अन्तर्सम्बन्धित हो रहा है तथा मानव जीवन में सभी अंगों को प्रभावित कर रहा है। वैश्वीकरण सम्पूर्ण विश्व में बढ़ी हुई सामाजिक, सांस्कृतिक अन्तर्सम्बंद्धता का द्योतक है। आज हम एक ओर वैश्विक संस्कृति से प्रभावित हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर हमारी स्थानीय संस्कृति को वैश्विक पहचान मिल रही है। ऐसा नहीं है कि गैर पश्चिमी जीवन पद्धति से प्रभावित हुए हैं – वरन् पूर्वी दर्शनों एवं प्रबन्धनों के तरीकों, संगीत, भोजन आदि जैसे दूसरी सभ्यताओं के तत्वों को अमेरिकन एवं यूरोपियनों ने भी स्वीकार किया है। इसी प्रकार सांस्कृतिक प्रभावों की दोहरी स्वीकृति एक नई वैश्विक सम्मिश्रित संस्कृति को उत्पन्न कर रही है। व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र के निर्माण का मुख्य पहलू है। उसकी श्रम शक्ति एवं संघर्ष शक्ति से ही वह सुदृढ़ एवं समृद्धशाली होता है। किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं वहाँ के विकास में वहाँ के कुशल नागरिकों, सफल व्यवसायी और अपने कार्यक्षेत्र में पारंगत भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों के योगदान पर निर्भर है, जो राष्ट्र जितना आर्थिक सम्पन्नता के स्रोत बनाता है वह राष्ट्र उतना ही अधिक समृद्ध एवं विकसित होता है। राष्ट्र के विकास में प्रत्येक व्यक्ति का योगदान निश्चित है किन्तु औद्योगिक इकाईयाँ राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में सबसे अहम भूमिका निभाती है।

विभिन्न वर्ग

विभिन्न वर्ग से तात्पर्य उद्योगों से कार्य कर रहे व्यक्तियों की विभिन्नता से है। इसमें पद, प्रस्थिति, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर विभिन्नता है। इनके विचारों, रहन–सहन खानपान एवं जीवन शैली में विभिन्नता होती है। चूंकि हर व्यक्ति अपने गुण, विचार, योग्यता में भिन्न होता है। इसी कारण ये कारक विभिन्न वर्ग को जन्म देते हैं। यहाँ पर विभिन्न वर्ग से तात्पर्य उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों को उसकी आय के आधार पर तीन भिन्न–भिन्न वर्गो उच्च, मध्य एवं निम्न में वर्गीकृत किया गया है। इन्हीं तीनों वर्गो के बालक एवं बालिकाओं पर यह अध्ययन केन्द्रित है।

1. उच्च आय वर्ग 2. मध्य आय वर्ग 3. निम्न आय वर्ग

अध्ययन की आवश्यकता – शिक्षा द्वारा व्यक्ति अपने को इस योग्य बनाने का प्रयास करता है कि वह अपने जीवन का निर्वाह समुचित ढ़ंग से कर सके : कार्गिक वर्ग देश की समृद्धि की रीढ़ का कार्य करते हैं जिन पर विकास का समस्त ढ़ांचा टिका हुआ है। समस्त उद्योग, कल–कारखाने कर्मचारियों के बलबूते टिका होता है। उद्योगों को चलाने के लिए प्रमुख संसाधन कार्मिक वर्ग होता है। कर्मिक वर्ग विभिन्न क्षेत्रों से रोजगार के लिए आते हैं, कुछ स्थानीय होते हैं तथा कुछ अन्य शहरों अथवा प्रांतों से भी संबंधित होते हैं, ये अपनी शिक्षा एवं योग्यता के आधार पर कार्यो में लगे होते हैं।शिक्षा का समुदाय से अटूट संबंध है जिसके कारण कभी समुदाय शिक्षा को तथा कभी शिक्षा समुदाय को प्रभावित करती है। समुदाय की आवश्यकतानुसार ही शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। समुदाय के मूल्यों, आदर्शो, मान्यताओं, आवश्यकताओं, आर्थिक स्थिति, आदि का प्रभाव शिक्षा पर पूर्णरूपेण परिलक्षित होता है। विशिष्ट समुदाय की गहन जानकारी उसमें रह रहे व्यक्तियों को होती है। उद्योगों का पूर्णतया ज्ञान उस समुदाय में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को होता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं।

1. विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की बोद्धिक–योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं।

1. विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस मुख्य परिकल्पना की तीन उप–परिकल्पनाऐं निर्मित की गई हैं –
   i) उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
   ii) उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
   iii) मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं। इस मुख्य परिकल्पना की तीन उप–परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं –
   i) उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
   ii) उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

iii) मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थ अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

शोध अध्ययन की समस्या एवं शोध उद्देश्य निर्धारण के पश्चात् अध्ययन का सीमाकंन किया जाता है चूंकि समस्या का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है अतः सीमित अवधि, साधन एवं सुविधाओं में इसका अध्ययन संभव नहीं है।

अतः समय साधन एवं सुविधाओं को दृष्टिकोण रखते हुए अध्ययन की सीमा का निर्धारण किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्नलिखित बिन्दुओं में परिसीमित किया गया है।

1. न्यादर्श के रूप में विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं का चयन किया गया है, जिनकी संख्या 500 निर्धारित की गयी है।

3. बालक–बालिकाओं में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के ही छात्र–छात्राओं को चयन किया गया है।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी डॉ. वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया है।

सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण डॉ0 मोहन चन्द्र जोशी द्वारा निर्मित है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या अनुसंधान की समस्या तथा परिकल्पना का निरूपण कर लेने के पश्चात् शोधकर्ता के समक्ष परिकल्पना के सत्यापन की समस्या उत्पन्न होती है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है; जिसके आधार पर आंकड़ों को एकत्रित किया गया तथा 'टी' परीक्षण के द्वारा आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है।

सारणी संख्या 1

विभिन्न वर्ग के बालक बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांको के मध्य सार्थकता के अन्तर की जॉच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'टी' मूल्य	P
बालक	उच्च आय वर्ग	50	40.90	12.25	5.37	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	128	31.83	5.80		
	उच्च आय वर्ग	50	40.90	12.25	3.60	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	72	33.67	8.60		
	मध्य आय वर्ग	128	31.18	5.80	2.20	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	72	33.67	8.60		
बालिका	उच्च आय वर्ग	50	33.40	7.40	4.06	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	137	35.81	10.65		
	उच्च आय वर्ग	50	33.40	7.40	1.65	N.S
	निम्न आय वर्ग	63	39.04	8.05		
	मध्य आय वर्ग	137	39.04	10.65	2.38	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	63	35.81	8.05		
बालक एवं बालिका	उच्च आय वर्ग बालक	50	40.90	12.25	3.71	.01 पर सार्थक
	उच्च आय वर्ग बालिका	50	33.40	7.40		
	मध्य आय वर्ग बालक	128	31.18	5.80	7.56	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग बालिका	137	39.04	10.65		
	निम्न आय वर्ग बालक	72	33.67	8.60	1.50	N.S
	निम्न आय वर्ग बालिका	63	35.81	8.05		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों के मध्य शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ जो .05 स्तर पर सार्थ है। इसी प्रकार मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा में अन्तर है यह अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है।

बालिकाओं के समूह में उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .01 स्तर पर पाया गया है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर पाया गया है। यह अन्तर 05 स्तर पर सार्थक है।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः पूर्व निर्धारित परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसका कारण इन दोनों वर्गो के मध्य समीयता के कारण घर के वातावरण एवं समाज का प्रभाव शैक्षिक आकांक्षा पर पड़ता है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में प्राप्त अन्तर से स्पष्ट है कि इनकी आकांक्षा स्तर पर पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का प्रभाव है। निम्न आय वर्ग के बालकों में शिक्षा प्राप्त करने की उच्च आकांक्षा का अभाव है। इसका सम्भावित कारण उनकी आर्थिक सामाजिक प्रस्थिति हो सकती है।

मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में प्राप्त अतंर यह स्पष्ट करता है कि दोनों आय वर्ग के बालकों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर उनकी आर्थिक प्रस्थिति से प्रभावित है।

इसी प्रकार बालिकाओं के समूह में उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ है इसका कारण यह हो सकता है कि दोनों वर्गो की पारिवारिक पृष्ठ भूमि एक जैसी है अतः इसका प्रभाव शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर पड़ रहा है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति के अनुसार अधिक ऊँचा है एवं दोनों का आकांक्षा स्तर एक समान है।

मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है इससे स्पष्ट होता है कि निम्न आय वर्ग की बालिकाएं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर की है इसका कारण यह हो सकता है कि निम्न आय वर्ग की बालिकाओं एवं बालकों का अधिकांश समय अपने विद्यालय में अपने उच्च एवं मध्य वर्ग के मित्रों के साथ व्यतीत होता है। अतः उनकी आकांक्षा स्तर पर उनके समूह के स्तर का सार्थक प्रभाव होता है।

उच्च आय वर्ग के बालक–बालिकाओं के मध्य उनकी शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा में प्राप्त अंतर का कारण लिंग भेद हो सकता है बालिकाओं की अपेक्षा बालक उच्च शैक्षिक आकांक्षा रखते हैं। किन्तु निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर समान है। निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर समान होने का मुख्य कारण उनकी आर्थिक–सामाजिक प्रस्थिति का एक समान होना है।

इस प्रकार पूर्व निर्मित शुन्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शुन्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक स्वीकृत की जा सकती है कि विभिन्न आया वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।

बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विभिन्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विस्तृत विवरण सारणी 2 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 4 (2) 2

विभिन्न वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना

क्र.सं.		प्राप्तांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
1.	उच्च शै0 आ0 स्तर	54 से ऊपर	9	22	8
2.	औसत से अधिक	45—55	13	23	16
3.	औसत शै0 आ0 स्तर	30—44	21	64	22
4.	औसत से कम	20—29	7	19	26
5.	निम्न शै0 आ0 स्तर	20 से कम	00	00	00
		संख्या = 50		128	72

सारणी से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर रखने वाले बालकों की संख्या तीनों आय वर्ग में एक समान है। इसी प्रकार औसत शैक्षिक स्तर वाले बालकों का अनुपात तीनों वर्ग के समान है।

इसी प्रकार बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विभिन्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विवरण सारणी संख्या 3 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 3

विभिन्न वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना

क्र.सं.		प्राप्तांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
1.	उच्च शै0 आ0 स्तर	54 से ऊपर	07	11	04
2.	औसत से अधिक	45—55	04	24	13
3.	औसत शै0 आ0 स्तर	30—44	35	76	40
4.	औसत से कम	20—29	04	26	16
5.	निम्न शै0 आ0 स्तर	20 से कम	00	00	00
		संख्या = 53		137	63

सारणी से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर रखने वाले बालिकाओं की संख्या उच्च आय वर्ग में 07, मध्य आय वर्ग में 11 तथा निम्न आय वर्ग में मात्र 04 है। उच्च एवं मध्य आय वर्ग में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं की अपेक्षा औसत शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाली बालिकाओं की संख्या अधिक है। इसी प्रकार निम्न आय वर्ग में भी औसत शैक्षिक आंकाक्षा स्तर वाले बालिकाओं की अपेक्षा में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं की संख्या कम है। इससे स्पष्ट है कि तीनों समूहों

में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं की अपेक्षा औसत शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं का अनुपात समान है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति, माता–पिता का शैक्षिक स्तर तथा अपने मित्र समूह का गहरा प्रभाव हे। प्राप्त परिणाम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं में उच्च आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की अपेक्षा शैक्षिक आकांक्षा का स्तर निम्न है।

विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन :–

विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक योग्यता का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का च विभिन्न वर्ग के लोगों के बालक–बालिकाओं की बोद्धिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एम. सी. जोशी द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता का मापन किया गया तथा परिणामों के आधार पर बौद्धिक–योग्यता का विवेचन किया गया है।

बौद्धिक–योग्यता पर विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं के माध्य, मानक–विचलन एवं 'टी' मूल्य का विस्तृत विवरण सारणी संख्या 4 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 4

विभिन्न वर्ग के बालक बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांको के मध्य सार्थकता के अन्तर की जॉच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'टी' मूल्य	P
बालक	उच्च आय वर्ग	50	54.30	13.00	0.50	N.S
	मध्य आय वर्ग	128	53.21	13.70		
	उच्च आय वर्ग	50	54.30	13.00	0.70	N.S
	निम्न आय वर्ग	72	52.76	10.25		
	मध्य आय वर्ग	128	53.21	13.70	0.26	N.S
	निम्न आय वर्ग	72	52.76	10.25		
बालिका	उच्च आय वर्ग	50	52.00	5.26	3.65	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	137	56.60	11.86		
	उच्च आय वर्ग	50	52.00	5.26	0.27	N.S
	निम्न आय वर्ग	63	51.52	13.05		
	मध्य आय वर्ग	137	56.00	11.86	2.63	.01 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	63	51.52	13.05		
बालक एवं बालिका	उच्च आय वर्ग बालक	50	54.30	13.00	1.16	N.S
	उच्च आय वर्ग बालिका	50	52.00	5.26		
	मध्य आय वर्ग बालक	128	53.21	13.70	2.16	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग बालिका	137	56.60	11.86		
	निम्न आय वर्ग बालक	72	52.78	10.25	0.61	N.S
	निम्न आय वर्ग बालिका	63	51.52	13.05		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक योग्यता में कोई सार्थक

अन्तर नहीं है। मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता में कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह अन्तर .01 पर सार्थक है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में भी सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह अन्तर .01 स्तर पर है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है। मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में अन्तर हैं यह अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक हैं। इस प्रकार पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शुन्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है कि मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में सार्थक अन्तर हैं।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक नहीं प्राप्त होने का मुख्य कारण है कि दोनों आय वर्ग लगभग एक समान हैं। दोनों आय वर्ग की घरेलू वातावरण, पारिवारिक पृष्ठ भूमि समान होने के कारण ही इनकी बौद्धिक–योग्यता समान हैं। निम्न आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता का स्तर उच्च एवं मध्य आय वर्ग के समान पाया गया है। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता स्तर का मध्यमान प्राप्तांक कम हैं इसका सम्भावित मुख्य कारण यह हो सकता है कि उनकी गणितीय योग्यता में कमी का पाया जाना परम्परा से यह जाना जाता है कि छात्राओं के लिए अंक व अंक बोध एक हौवा की तरह है जो कि इनको गणितीय ज्ञान प्राप्त करने से रोकता है इसका अर्थ है कि बालिकाओं का समूह बालकों की अपेक्षा गणितीय योग्यता में कमजोर होता है। ''बर्गर'' ने भी सारांश में कहा है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की गणितीय क्रिया कलापों से दूर हो जाती हैं। गणितीय योग्यता में न्यून होने के कारण ही बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ बौद्धिक–योग्यता स्तर में न्यून पायी जाती हैं।

यहाँ एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालिकाओं की अपेक्षा निम्न आय वर्ग के बच्चों की बौद्धिक स्तर निम्न क्यों होता है? इसके कई कारण हो सकते हैं। एक सम्भावित कारण गरीबी है। गरीबी स्वयं बौद्धिक विकास को कुपोषण एवं बीमारी के कारण प्रभावित करती है। कुपोषण से गर्भावस्था में भ्रूण का विकास प्रभावित होता है और नवजात शिशु के मस्तिष्क वृद्धि को भी प्रभावित करता है उदाहरण के तौर पर उच्च सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति वाले घरेलू वातावरण के छात्रों को अप्रत्यक्ष रूप से माता–पिता द्वारा ऐसे मानसिक क्रिया कलापों के लिए प्रोत्सहित किया जाता है। जो कि बच्चे की मानसिक वृद्धि के लिए आवश्यक होते हैं उच्च आय वर्ग बच्चों के मानसिक विकास के लिए अधिक सुविधाएं एवं अवसर उपलब्ध कराता है जैसे दो या तीन वर्ष का बच्चा जब बोलना, सीखना शुरू करता है तो वह हर घटना एवं वस्तु को जानना, समझना चाहता है जिसको केवल पढ़ लिखें माता–पिता ही संतुष्ट कर पाते हैं। उच्च आय वर्ग आधुनिक खिलौने, मन बहलाव के वाद्य यंत्र, अच्छी कहानी की किताबें, विभिन्न प्रकार की पत्रिकाएं अपने बच्चों को उपलब्ध कराता है। संतुलित एवं पौष्टिक

आहार, उपयोगी कार्यो को करने के लिए बार–बार प्रेरित करना एवं बढ़ावा देना बालक के मानसिक विकास के उत्प्रेरक का कार्य करते हैं निम्न आय वर्ग को उपरोक्त सभी सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं अतः उनकी आर्थिक स्थिति बच्चों के मानसिक विकास को रोकने व पंगु बनाने का कार्य करती हैं। इसलिए उच्च आर्थिक स्थिति वाले बालक–बालिकाओं की अपेक्षा निम्न आर्थिक स्थिति वाले बालक–बालिकाओं को बुद्धि परीक्षण में अच्छे अंक प्राप्त नहीं होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक यौग्यता में अन्तर होता है। उच्च एवं मध्य आय वर्ग की तुलना में निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक –योग्यता का स्तर निम्न होता है। बालिकाओं की तुलना मे बालकों की बौद्धिक योग्यता के प्राप्तांक उच्च थे। निम्न आर्थिक स्तर वाले बालकों की बौद्धिक योग्यता का स्तर भी निम्न होता हैं। इस क्रम में उच्च, मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं को उनकी बुद्धि–फलांक के अनुसार अति श्रेष्ठ, तीव्र सामान्य, सामान्य, मन्द सामान्य, सीमावर्ती एवं दोषपूर्ण बुद्धि वाले के रूप में वर्गीकृत किया गया हैं। प्रत्ये बालक–बालिकाओं की बुद्धि–फलांक की गणना वैश्लर विधि द्वारा की गई है तथा निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया गया –

$$\text{बुद्धि–फलांक} = \frac{\text{व्यक्ति का प्राप्तांक}}{\text{उस व्यक्ति की आयु का मध्यमान}} \times 100$$

प्रत्येक श्रेणी के बालकों की संख्या बुद्धि–फलांक के अनुसार सारणी संख्या 2 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 5

बुद्धि–फलांक के अनुसार विभिन्न आय वर्ग के बालकों की संख्या का वितरण

वर्गीकरण	प्राथमिक बुद्धि फलांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
अतिश्रेष्ठ	161 व ऊपर	02	09	02
श्रेष्ठ	141 से 160 तक	03	10	03
तीव्र सामान्य	121 से 140 तक	11	40	17
सामान्य मन्द	81 से 120 तक	26	57	42
सामान्य	61 से 80 तक	07	08	07
सीमावर्ती	41 से 60 तक	01	04	01
दोषपूर्ण	40 और नीचे	00	00	00
	संख्या	50	128	72

सारणी संख्या 5 स्पष्ट रूप से यह इंगित करती है कि उच्च आय वर्ग की 16, मध्य आय वर्ग की 59 एवं निम्न आय वर्ग की 22 बालकों की बुद्धि–फलांक औसत (सामान्य) से ऊपर हैं। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग की 8, मध्य आय वर्ग की 12 एवं निम्न आय वर्ग की 08 बालकों का बुद्धि–फलांक औसत (सामान्य) से नीचे हैं तथा औसत (सामान्य) बुद्धि–फलांक रखने वाली उच्च आय वर्ग में 26, मध्य आय वर्ग में 57 तथा निम्न आय वर्ग में 42 बालक हैं।

क्रमशः प्रत्येक श्रेणी की बालिकाओं की संख्या बुद्धि–फलांक सारणी संख्या 6 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 6
बुद्धि–फलांक के अनुसार विभिन्न आय वर्ग के बालिकाओं की संख्या का वितरण

वर्गीकरण	प्राथमिक बुद्धि फलांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
अतिश्रेष्ठ	161 व ऊपर	00	03	00
श्रेष्ठ	141 से 160 तक	11	31	10
तीव्र सामान्य	121 से 140 तक	09	31	14
सामान्य मन्द	81 से 120 तक	24	62	28
सामान्य	61 से 80 तक	02	07	08
सीमावर्ती	41 से 60 तक	04	03	03
दोषपूर्ण	40 और नीचे	00	00	00
	संख्या	50	137	63

सारणी संख्या 6 स्पष्ट रूप से यह इंगित करती है कि उच्च आय वर्ग के 20, मध्य आय वर्ग के 65 एवं निम्न आय वर्ग की 24 बालिकाओं का बुद्धि–फलांक औसत (सामान्य) से ऊपर हैं। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग के 06, मध्य आय वर्ग के 10 एवं निम्न आय वर्ग के 11 बालिकाओं का बुद्धि–फलांक औसत से नीचे तथा औसत (सामान्य) बुद्धि–फलांक रखने वाले उच्च आय वर्ग के 24, मध्य आय वर्ग में 62 तथा निम्न आय वर्ग में 28 बालिका हैं।

तीव्र सामान्य बुद्धि रखने वाले 22 बालक एवं 24 बालिकाएं जो कि निम्न आय वर्ग से सम्बद्ध है, परिकल्पना का तर्किक पक्ष है कि बालक बुद्धि के एक निश्चित स्तर के साथ जन्म लेता है विपन्नता के अनुभवों से उसकी का हनन नहीं होता है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाएं शिक्षा के क्षेत्र में कमजोर बुद्धि के साथ प्रवेश करते हैं। यही बौद्धिक कमी उनके शैक्षिक उद्यम एवं जीवन की प्रगति पर अपना दुष्प्रभाव डालती है।

निष्कर्ष अध्ययन से प्राप्त परिणाम से यह निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का निम्न होना, बौद्धिक योग्यता स्तर का निम्न होना। यह सब उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण है। निम्न आय वर्ग के बच्चे जब शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं तब उनके विचार, उनकी आकांक्षाएं बहुत ही तीव्र होती हैं किन्तु ये मानसिक रूप से दुर्बल होते हैं यही मानसिक दुर्बलता उनके शैक्षिक उद्यम तथा जीवन की प्रगति पर अपना दुष्प्रभाव डालती है जिसके कारण ये बच्चे जीवन में सभी स्तर पर निम्न होते चले जाते हैं

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, अरुण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2004

पाण्डेय, डा. के. पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी, 2006

सुखिया, एस. पी. तथा मल्होत्रा वी. पी. शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

सरीन, डा. शशिकला,डा. अंजली शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

तिवारी, डा. गोविन्द शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधर, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

सिंह ए. के. शिक्षा में अनुसन्धान, पोइन्टर पब्लिशर्स, 2005

पाण्डेय, के.पी. शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अमिताश प्रकाशन, मेरठ

सिंह, डा. रामपाल शैक्षिक मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

कपिल, डा. एच. के. सांख्यिकी के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

लवानियाँ डा. एम. ए. समाजशास्त्रीय अनुसन्धान तर्क व विधियाँ,

गिलपफोर्ड, जे.पी. फन्डामेन्टल स्टैटिस्टिक्स इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, 1982

Anderson and Parker, Society : Its introduction and operation : 1966 P. 160

Aristotle Quoted by Sociology Shahiya Bhawan : Agra 1984 : P. 203 :

Davis, K. Human Society : The Macmillan and Co. New York : 1959 : P. 108.

Desai, J.P. The Joint Family in India : Sociological Bullentin : \Vol, V, No. 2,Sept.1955. P. 105

Kapadia, K. M. Marriage and Family in India : Bombay, Oxford University Press : 1958 : P. 104.

Kapadia, K. M. Marriage and Family in India: Bombay, Oxford University Press : 1958 : P. 168.

Kulkarni, S.S. &et. Al. A Handbook of Programmed Learning, CASE, M.S.University, IAPL Publication, Baroda, 1968

Keevs, S. P. Educational Research Methodology and Measurement An International Hand book, Pergaman Press, P. P. 527, 528

Guil Ford, S. P. Phycomatric Methods, IInd Edition, Indian Reprint, Tata Mcgraw Hills Publishing & Ltd. 1975

Clayton, Thomas E. Teaching and Learning : Psychological Perspective, Prentice Hall Englewood Cliffs, New Jersey, 1965

Sharma, R.A. Technology of Teaching, International Publishing House, Meerut, 488 pp, 1983

Gagne, Robert The Conditions of Learning, Halt Rinehart and Winston Inc., New York, 408 pp, 1964

Decceco, John P. The Psychology of Learning and Instructional Technology, Prentice Hall Pvt. Ltd., New Delhi, 800 pp, 1970